301hi07

7

पेड़ और एक था ठूँठ!

मान लीजिए आपके चार दोस्तों ने आपके साथ सिनेमा देखने जाने का प्रोग्राम बना लिया। सभी लोग सिनेमा देखना चाहते हैं पर आपका मन नाटक देखने का कर रहा हो, तो ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे?

(क) अपने मन की मानेंगे और मित्रों के साथ सिनेमा देखने नहीं जाएँगे।

(ख) अपने मित्रों को यह तर्क देकर नाटक देखने जाने के लिए राज़ी कर लेंगे कि सिनेमा के कई शो और होंगे, किंतु नाटक का शो तो आज ही होगा।

(ग) मित्रों के प्रस्ताव का सम्मान करते हुए सिनेमा जाने के लिए राज़ी हो जाएँगे।

(घ) सभी से लड़ेंगे, खुद कहीं नहीं जाएँगे और न किसी को जाने देंगे।

(ङ) कोई अन्य उत्तर

अपना सही उत्तर यहाँ लिखिए–

.....

.....

आइए, प्रस्तुत पाठ के माध्यम से हम व्यक्ति के विचारों की द ढ़ता और लचीलेपन के बारे में बातचीत करते हैं और देखते हैं कि लेखक ने जीवन-व्यवहार के सत्य को किस प्रकार स्पष्ट किया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- जीवन में समझौता करने की स्थितियों के गुण-दोष बता सकेंगे;
- जीवन जीने की उपयुक्त शैली का उल्लेख कर सकेंगे;
- पाठ में आए सूत्र-वाक्यों की व्याख्या कर सकेंगे;
- सरल बोलचाल की भाषा में गंभीर विषय प्रस्तुत करने की शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे;

- उदाहरण शैली का प्रयोग कर सकेंगे;
- जीवन की गुरु गंभीर और दार्शनिक स्थितियों को सरल भाषा में उदाहरण शैली का प्रयोग करते हुए बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

चित्र 7.1

1. आपको चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है?

   .....

2. नदी की क्या विशेषता है?

   .....

3. पहाड़ की क्या विशेषता है?

   .....

4. दोनों (नदी और पहाड़) की प्रकृति में क्या अंतर है?

   .....

7.1 मूलपाठ

आइए, एक बार पाठ को पढ़ लेते हैं।

एक था पेड़ और एक था ठूँठ !

जिस मकान में मैं ठहरा, उसकी खिड़की के सामने ही खड़ा था एक पूरा, पनपा बाँझ का पहाड़ी पेड़। पलंग पर लेटे-लेटे वह यों दीखता कि जैसे कुशल-समाचार पूछने को आया कोई मेरा ही मित्र हो।

टिप्पणी

एक दिन उसे देखते-देखते इस बात पर मेरा ध्यान गया कि यह इतना बड़ा पेड़ हवा का तेज़ झोंका आते ही पूरा-का-पूरा इस तरह हिल जाता है, जैसे बीन की तान पर कोई साँप झूम रहा हो और उसका ऊपर का हिस्सा, हवा जब और तेज़ हो जाती है तो काफ़ी झुक जाता है, पर हवा के हलका पड़ते ही वह फिर सीधा हो जाता है।

हवा मौज़ में थी, अपने झोकों में झूम रही थी, इसलिए बराबर यह क्रिया होती रही और मैं उसे देखता रहा। देखता क्या रहा, उसकी झुक-झूम में रस लेता रहा। पड़े-पड़े वह पेड़ पूरा न दीखता था, इसलिए मैं पलंग से खिड़की पर आ बैठा। अब मुझे वह पेड़ जड़ से फुंगल तक दिखाई देने लगा और मेरा ध्यान इस बात की ओर था कि हवा कितनी भी तेज़ हो, पेड़ की जड़ स्थिर रहती है – हिलती नहीं है।

यहीं बैठे, मेरा ध्यान एक दूसरे पेड़ पर गया, जो इस पेड़ से काफ़ी निचाई में था। पेड़ का ठूँठ, सूखा व क्ष और सूखा व क्ष माने निर्जीव-मुरदा व क्ष। सोचा, वह व क्ष का कंकाल है; जैसा एक दिन सभी को होना है! अब मैं कभी इस हरे-भरे पेड़ की ओर देखता, कभी उस सूखे ठूँठ की तरफ़, यों ही देखते-भालते मेरा ध्यान इस बात की ओर गया कि वह धीमे चले या वेग से, यह ठूँठ न हिलता है, न झुकता है।

न हिलना, न झुकना; मन में यह दो शब्द आए और मैंने आप-ही आप इन्हें अपने में दोहराया–न हिलना, न झुकना।

दूर अंतर में कुछ स्पर्श हुआ, पर वह स्पर्श सूक्ष्म था यों ही संकेत-सा। शब्द चक्कर काटते रहे न हिलना, न झुकना और तब आया वह वाक्य–न हिलना, न झुकना जीवन की स्थिरता का, द ढ़ता का चिह्न है और वह वीर पुरुष है, जो न हिलता है, न झुकता है।

तभी मैंने फिर देखा उस ठूँठ की ओर। वह न हिल रहा था, न झुक रहा था! मन में अचानक प्रश्न आया–न हिलना, न झुकना जीवन की स्थिरता का चिह्न है, पर उस ठूँठ में जीवन कहाँ है? यह तो मुरदा पेड़ है!

अब मेरे सामने एक विचित्र द श्य था कि जो जीवित था, वह हिल रहा था, और जो म तक था वह न हिल रहा था, न झुक रहा था। तो न हिलना, न झुकना जीवन की स्थिरता का चिह्न हुआ या म त्यु की जड़ता का?

अजीब उलझन थी, पर समाधान क्या था? मैं दोनों को देख रहा था, देखता रहा और तब मेरे मन में आया कि जो परिस्थितियों के अनुसार हिलता, झुकता नहीं, वह वीर नहीं, जड़ है; क्योंकि हिलना और झुकना ही जीवन का चिह्न है।

हिलना और झुकना; अर्थात् परिस्थितियों से समझौता। जिस जीवन में समझौता नहीं, समन्वय नहीं, सामंजस्य नहीं, वह जीवन कहाँ है? वह तो जीवन की जड़ता है; जैसे यह ठूँठ और जैसे यह पहाड़ का शिखर।

शब्दार्थ

पनपा – कोंपल फूटना, नए पत्ते निकलना
फुंगल – फुनगी
ठूँठ – सूखा पेड़

टिप्पणी

मुझे ध्यान आया कि जीते-जागते जीवन में भी एक ऐसी मनोदशा आती है, जब मनुष्य हिलने और झुकने से इनकार कर देता है। अतीत में रावण और हिरण्यकश्यप इस दशा के प्रतीक थे तो इस युग में हिटलर और स्टॉलिन, जो केवल एक ही मत को सही मानते रहे और वह स्वयं उनका मत था। आज की भाषा में इसी का नाम है डिक्टेटरी-अधिनायकता।

विश्व की भाषा है – दे, ले।

विश्व की जीवन-प्रणाली है – कह, सुन।

विश्व की यात्रा का पथ है – मान, मना।

इन तीनों का समन्वय है – हिलना-झुकना और समझौता-समन्वय।

जिसमें यह नहीं है, वह जड़ है, भले ही वह उस ठूँठ की तरह निर्जीव हो या रावण की तरह ज़िद्दी।

मेरी खिड़की के सामने खड़ा हिल रहा था बाँझ का विशाल पेड़ और दूर दिख रहा था वह ठूँठ। समय की बात; तभी पास के घर से निकला एक मनुष्य और वह अपनी छोटी कुल्हाड़ी से उस ठूँठ की एक छोटी टहनी काटने लगा। सामने ही दिख रही थी–सड़क, जिस पर अपनी कुदाल से काम कर रहे थे कुछ मज़दूर।

कुल्हाड़ी और कुदाल; कुदाल और कुल्हाड़ी – मैंने बार-बार इन शब्दों को दोहराया और तब आया मेरे मन में यह वाक्य–विश्व की भाषा है–दे, ले; विश्व की जीवन-प्रणाली है–कह, सुन; विश्व की यात्रा का पथ है–मान, मना; अर्थात् हिल भी और झुक भी, पर जो इन्हें भूलकर जड़ हो जाता है, वह ठूँठ हो, पर्वत का शिखर हो, अहंकारी मानव हो, विश्व उससे जिस भाषा में बात करता है उसी के प्रतिनिधि हैं ये कुल्हाड़ी-कुदाल।

साफ़-साफ़ यों कि जीवन में दो भी, लो भी, कहो भी, सुनो भी, मानो भी, मनाओ भी; और यह सब नहीं, तो तैयार रहो कि तुम काट डाले जाओ, खोद डाले जाओ, पीस डाले जाओ!

मैं खिड़की से उठकर अपने पलंग पर आ पड़ा। बाँझ का पेड़ अब भी हिल रहा था, झुक रहा था, झूम रहा था, पर तभी मेरे मन में उठा एक प्रश्न – तो क्या जीवन की चरितार्थता बस यही है कि जीवन में हवा का झोंका आया और हम हिल गए? जीवन में संघर्ष का झटका आया और हम झुक गए? साफ़-साफ़ यों कि यहाँ-वहाँ हिलते-झुकते रहना ही महत्त्वपूर्ण है और जीवन की स्थिरता-द ढ़ता, जीवन के नकली सत्य ही हैं?

प्रश्न क्या है, कम्बख्त बिजली की तेज़ शॉक है यह, जो यों धकियाता है कि एक बार तो जड़ से ऊपर तक सब पाया-संजोया अस्त-व्यस्त हो उठे। सोचा – नहीं जी, यह हिलना और झुकना जीवन की कृतार्थता नहीं, अधिक से अधिक यह कह सकते हैं कि विवशता है। जीवन की वास्तविक कृतार्थता तो न हिलना, न झुकना ही है, यानी द ढ़ रहना ही है– ''मरियम सो मरियम, पै टरियम नहीं।''

मैं अपने पलंग पर पड़ा देखता रहा कि बाँझ का पेड़ झुक रहा है, झूम रहा है, हिल रहा है और दूर पर खड़ा ठूँठ न हिलता है, न झुकता है। जीवन है व क्ष में, जो जीवन की

शब्दार्थ

जड़ता – स्थिरता, जिसमें कोई हरकत न हो

समाधान – हल

समन्वय – विरोधी चीजों को मिलाना दोनों में तालमेल बिठाना।

सामंजस्य – तालमेल बिठाना

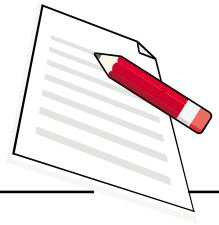

टिप्पणी

कृतार्थता-द ढ़ता से हीन है और वह द ढ़ता है ठूँठ में, जो जीवन से हीन है; अजीब उलझन है यह!

तभी हवा का एक तेज़ झोंका आया और बाँझ हिल उठा। मेरी द ष्टि उसकी झूमती देह-यष्टि के साथ रपटी-रपटती उसकी जड़ तक चली गई और तब मैंने फिर देखा कि हवा का झोंका आता है तो टहनियाँ हिलती हैं, तना भी झूमता है, पर अपनी जगह जमी रहती है उसकी जड़। हवा का झोंक हलका हो या तेज़, वह न झुकती है, न झूमती है।

अब स्थिति यह कि कभी मैं देख रहा हूँ स्थिर जड़ को और कभी हिलते-झूमते ऊपरी भाग को। लग रहा है कि कोई बात मन में उठ रही है और वह उलझन को सुलझाने वाली है, पर वह बात क्या है? बात मन की तह से ऊपर आ रही है – ऊपर आ गयी है।

बात यह है कि हमारा जीवन भी इस व क्ष की तरह होना चाहिए कि उसका कुछ भाग हिलने-झुकने वाला हो और कुछ भाग स्थिर रहने वाला, यह जीवन की पूर्ण कृतार्थता है।

शब्दार्थ

चरितार्थ – घटित होना
कृतार्थ – किसी पर उपकार करना
देह-यष्टि – शारीरिक सौष्ठव
रपटी-रपटती – फिसलती हुई
अड़ियल – ज़िद्दी
औचित्य – जो उचित हो, ठीक हो
जीवंत – जीवन युक्त

बात अपने में पूर्ण है, पर ज़रा स्पष्टता चाहती है और वह स्पष्टता यह है कि हम जीवन के विस्त त व्यवहार में हिलते-झुकते रहें, समन्वयवादी रहें, पर सत्य के सिद्धांत के प्रश्न पर हम स्थिर रहें, द ढ़ रहें और टूट भले ही जाएँ, पर हिलें नहीं, समझौता करें नहीं।

जीवन में देह है, जीवन में आत्मा है। देह है नाशशील और आत्मा है शाश्वत, तो आत्मा को हिलना-झुकना नहीं है और देह को निरंतर हिलना-झुकना ही है; नहीं तो हम हो जाएँगे रामलीला के रावण की तरह, जो बाँस की खपच्चियों पर खड़ा रहता है–न हिलता है, न झुकता है। हमारे विचार लचीले हों, परिस्थितियों के साथ वे समन्वय साधते चलें, पर हमारे आदर्श स्थिर हों। हमारे पैरों में जीवन के मोर्चे पर डटे रहने की भी शक्ति हो और स्वयं मुड़कर हमें उठने-बैठने-लेटने में मदद देने की भी।

संक्षेप में जीवन की कृतार्थता यह है कि वह द ढ़ हो, पर अड़ियल न हो।

द ढ़, जो औचित्य के लिए, सत्य के लिए टूट जाता है, वह हिलता और झुकता नहीं।

अड़ियल, जो औचित्य और अनौचित्य, समय-असमय का विचार किए बिना ही अड़ जाता है और टूट तो जाता है, पर हिलता-झुकता नहीं।

दो टूक बात यों कि जीवन वह है, जो समय पर अड़ भी सकता है और समय पर झुक भी, पर ठूँठ वह है, जो अड़ ही सकता है, झुक नहीं सकता।

एक है जीवंत द ढ़ता और दूसरा निर्जीव जड़ता।

हम द ढ़ हों, जड़ नहीं।

मैंने देखा, बाँझ का पेड़ अब भी हिल रहा था, झुक रहा था और ठूँठ अनझुका, अनहिला, ज्यों का त्यों खड़ा था।

–कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

टिप्पणी

7.2 बोध प्रश्न

1. लेखक कहाँ ठहरा ?
   (क) होटल में (ग) महल में
   (ख) मकान में (घ) झोंपड़ी में
2. खिड़की से लेखक को सबसे पहले क्या दिखाई दिया?
   (क) सरसों के झाड़ (ग) सुंदर जानी पहचानी लड़की
   (ख) बाँझ का पेड़ (घ) बर्फीली पहाड़ी
3. बाँझ का झूमता हुआ पेड़ प्रतीक है–
   (क) हमेशा खुश रहने का। (ख) हमेशा परेशान रहने का।
   (ग) आदर्शों पर डटे रहने का। (घ) स्थितियों से समझौता करने का।
4. विचारों के क्रम में अचानक लेखक का ध्यान गया–
   (क) गहरी घाटी की ओर। (ग) ठूँठ की ओर।
   (ख) पहाड़ की चोटी की ओर। (घ) सुंदर भवन की ओर।
5. सूखा व क्ष देखकर लेखक को लगा जैसे कोई–
   (क) गरीब आदमी खड़ा हो। (ग) सुंदर कलाकृति हो।
   (ख) कोई बहुत दिनों का प्यासा हो। (घ) पेड़ का कंकाल हो।
6. विश्व की भाषा है –
   (क) न दे, न ले (ग) दे, न ले
   (ख) दे, ले (घ) न दे, ले
7. विश्व की यात्रा का पथ है।
   (क) मान, मना (ग) मान, न मना
   (ख) न मान, न मना (घ) मना, न मान
8. ठूँठ का पेड़ प्रतीक है–
   (क) जड़ता का (ग) निर्जीवता का
   (ख) द ढ़ता का (घ) स्थिरता का

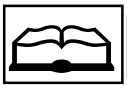

7.3 आइए समझें

आपको निबंध कैसा लगा? उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर भी आपने ढूँढ़ लिए हैं न! यदि आप उन्हें पूरा-पूरा हल कर लेते हैं, तो हम आगे बढ़ते हैं। अन्यथा एक बार और ध्यान से पूरा पाठ पढ़कर बोध प्रश्न हल कीजिए।

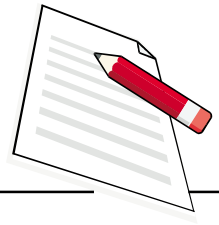

टिप्पणी

आइए, अब हम पाठ को विस्तार से समझते हैं। आप जानते ही हैं कि आमतौर से निबंध को तीन हिस्सों में लिखा जाता है। पहला होता है–प्रस्तावना, दूसरा विषय-वस्तु और तीसरा होता है–उपसंहार। आइए, हम देखें कि ''एक था.....'' में ये तीन अंग किस तरह प्रस्तुत किए गए हैं।

7.3.1 प्रस्तावना

इस निबंध में लेखक ने एक रमणीक पहाड़ी स्थल का ज़िक्र किया है। लेखक वहाँ एक मकान में ठहरता है और खिड़की से वह एक बाँझ के पेड़ को बड़े ध्यान से देखता है, फिर शुरू होता है उसके विचारों का सिलसिला। ये विचार एक-एक कर प्रश्नों के रूप में उसके सामने आते-जाते हैं और वह उनका उत्तर ढूँढ़ता चलता है।

बाँझ के पेड़ को देखकर सबसे पहले लेखक को महसूस होता है जैसे उसका कोई दोस्त सामने आकर खड़ा हो गया है और उसके हाल-चाल पूछ रहा है। जैसे ही हवा का तेज़ झोंका आता है, पेड़ झूमने लगता है। अब लेखक को पेड़ में और रस आने लगता है। तभी अचानक लेखक का ध्यान दूर निचाई पर दूसरे पेड़ की ओर जाता है, जो बिल्कुल सूख चुका है, मर चुका है, ठूँठ बन चुका है। उसमें अब जीवन शेष नहीं है।

ठूँठ मानो पेड़ का कंकाल है, जैसा कि एक न एक दिन हम सबको होना है। लेखक दोनों पेड़ों की तुलना करता है और पाता है कि तेज़ हवा के झोंके से हरा-भरा पेड़ तो खूब झूमता है, पर ठूँठ वैसे-का-वैसा ही खड़ा रहता है। उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। लेखक सोचता है कि 'न हिलना न झुकना' तो वीरों की द ढ़ता की निशानी है। पर यह ठूँठ तो निर्जीव है जिसमें जीवन ही नहीं, वह वीर और द ढ़ कैसा! इसी प्रकार के तर्क-जाल में फँसते हुए लेखक सोचने लगता है कि हरे-भरे पेड़ की तरह, जिसमें जीवन है उसे कठिन परिस्थितियाँ आने पर उनका सामना करना चाहिए। उनसे समझौता करते रहना चाहिए। पर यह तो कोई बात नहीं हुई कि कोई भी समस्या आई और तुरंत समझौता कर लिया। यहाँ लेखक रावण और हिरण्यकश्यप जैसे पौराणिक पात्रों का स्मरण करता है। साथ ही वर्तमान काल के हिटलर और स्टॉलिन का भी। क्या आप बता सकते हैं कि रावण और हिरण्यकश्यप, हिटलर और स्टॉलिन के नाम लेखक ने यहाँ क्यों लिए हैं, जी हाँ! उनके ज़िद्दीपन के कारण, वे अड़ियल थे। उन्होंने सही बात मानने से, सही राह पर चलने से इनकार कर दिया था और इसका परिणाम उन्हें क्या भुगतान पड़ा? क्या आप बता सकते हैं? जी हाँ! उन्हें जीवन में हार माननी पड़ी।

पाठगत प्रश्न 7.1

1. लेखक को पेड़ और ठूँठ में क्या अंतर दिखाई दिया
   (क) एक व क्ष झूमता है, दूसरा स्थिर है।
   (ख) एक खुश है, दूसरा दुःखी।
   (ग) एक सुंदर है, दूसरा कुरूप।
   (घ) दोनों में कोई अंतर नहीं।

टिप्पणी

2. जीवन का अर्थ है।
   (क) न हिलना, न झुकना। (ग) समस्याओं से लड़ते रहना।
   (ख) हिलना-झुकना। (घ) सदैव प्रसन्न रहना।
3. मनुष्य हिलने और झुकने से कब इनकार करता है–
   (क) ज़िद्दीपन के कारण (ग) बेवकूफ़ी के कारण
   (ख) असहयोग के कारण (घ) बुद्धिमत्ता के कारण
4. लेखक ने इस निबंध में हिटलर और स्टॉलिन का उदाहरण किस रूप में दिया है?
5. बाँझ के पेड़ को देखकर लेखक सबसे पहले क्या महसूस करता है?

7.3.2 विषय-वस्तु

इस चरण में लेखक ने व्यावहारिक अथवा दुनियादारी के चलन की चर्चा की है। विश्व की भाषा के बारे में उन्होंने बताया है कि आप दूसरों को कुछ न कुछ दें और उनसे अपने काम की चीज़ें लें। लेखक ने जीवन जीने की पद्धति को कहा–कह, सुन। यानी यदि सलीके से जीवन व्यतीत करना है तो अपनी बात को दूसरों तक पहुँचाना होगा और दूसरों की बातों को ध्यानपूर्वक सुनना होगा। यदि विश्व की यात्रा पूर्ण करनी है, तो मान–मना के रास्ते पर चलना होगा। अर्थात् दूसरों की बात मान जाओ या फिर दूसरों को अपनी बात के लिए मना लो, सहमत कर लो। यदि इन तीनों का मिला-जुला रूप आपके व्यवहार में उपस्थित है, तो आप एक हिलते-डुलते, हरे-भरे व क्ष के समान जीवन में परिस्थितियों से, समस्याओं से समझौता कर सकते हैं अन्यथा आपमें और उस मरे हुए सूखे व क्ष के ठूँठ में कोई अंतर नहीं है। ऐसे व्यक्ति जो निर्जीव, दूसरे व क्ष के समान कंकाल और रावण के समान ज़िद्दी होते हैं, न किसी को कुछ देते हैं न किसी से कुछ लेते हैं, न किसी से कुछ कहते हैं न किसी की सुनते हैं, न किसी की मानते हैं न किसी को मनाते हैं। सिर्फ़ अपने निर्णय को स्वीकार करते हैं, अपनी चलाते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन जीते हुए भी सूखे ठूँठ के समान होते हैं। ऐसे व्यक्तियों का सिर्फ़ एक ही इलाज होता है – कुल्हाड़ी और कुदाल। कुल्हाड़ी का कार्य है– किसी भी अंश को काटकर फेंक देना। कुदाल का कार्य है–उलट-पलट देना अर्थात् जो सामने है उसे नकार देना। ऐसे व्यक्तियों को नकार दिया जाता है या फिर काट कर अलग कर दिया जाता है, अस्वीकार कर दिया जाता है। जो हिल नहीं सकते, झुक नहीं सकते, सामंजस्य नहीं कर सकते, परिस्थितियों से समझौता नहीं कर सकते, ऐसे अहंकारी का प थ्वी पर क्या काम!

पाठगत प्रश्न 7.2

1. 'जड़' से लेखक का क्या तात्पर्य है?
   (क) जीवन की सार्थकता (ग) कुल्हाड़ी और कुदाल
   (ख) घ णा और द्वेषभाव (घ) पर्वत का शिखर

2. 'डिक्टेटरी' – 'अधिनायकता' का तात्पर्य है–

(क) दूसरों पर शासन करना
(ख) अपना प्रभुत्व बनाए रखना
(ग) अपने को ही सही मानना
(घ) अपना अधिकार न छोड़ना

3. अहंकारी मानव से दुनिया किस भाषा में बात करती है।

(क) ले, दे
(ख) मान, मना
(ग) कुल्हाड़ी और कुदाल
(घ) न कह, न सुन

4. इस निबंध में 'व क्ष का ठूँठ' किसका प्रतीक है?

5. कुल्हाड़ी का काम क्या है?

7.3.3 उपसंहार

अंतिम चरण में लेखक के विचारों का क्रम कुछ इस प्रकार आगे बढ़ता है कि किसी एक निष्कर्ष पर पहुँचे। अब उसका सोचना यह है कि क्या हरे-भरे पेड़ की तरह कोई भी हवा का झोंका आए यानी छोटे या बड़े कष्ट आएँ और व्यक्ति हार मान ले? यह तो ठीक नहीं! इस विचार के आते ही लेखक को एक धक्का-सा लगता है। वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि परेशानियों से समझौता करो, वह भी एक सीमा तक अर्थात् जहाँ तक झुक सकते हो झुको पर इतना भी नहीं कि टूट जाओ। परंतु उसके साथ अपने आदर्शों पर द ढ़ रहो, अपने सिद्धांतों से मत हिलो, जैसे व्यक्ति का शरीर बदलता रहता है पर आत्मा अमर होती है। ठीक उसी प्रकार जीवित व्यक्ति वही है जो परिस्थितियों को समझे और उसके अनुसार अपने को ढाले। कहा भी गया है ''जैसी चले बयार पीठि तब तैसी दीजै''। जहाँ जितना झुकना चाहिए वहाँ उतना झुको जहाँ अपने आदर्शों पर द ढ़ रहना चाहिए वहाँ द ढ़ रहो। सदैव समय का ध्यान रखते हुए समुचित स्थान पर विवेकपूर्ण निर्णय लो। इन बातों का जो ध्यान नहीं रखता वह अड़ियल कहलाता है, पेड़ का ठूँठ कहलाता है, निर्जीव जड़ कहलाता है। उसमें जीवन की द ढ़ता नहीं होती है।

हमारी यह जीवन-द ढ़ता ही हमारी पहचान बनाती है जो अपनी संस्कृति, अपनी परंपरा, अपनी विशेषता और सिद्धांतों पर द ढ़ बने रहकर स्थापित होती है। सत्य और आदर्शों पर चलना सिखाती है। जीवन में अपने सिद्धांतों पर डटे रहना और उचित समय पर झुकना ही जीवन है। आइए इसे ऐसे समझते हैं–

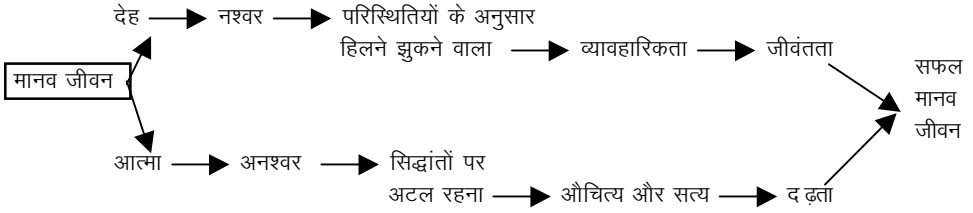

पाठगत प्रश्न 7.3

1. निर्जीव जड़ता का जीवन में अर्थ है।

   (क) आदर्शों पर द ढ़ रहना
   (ख) बेजान सूखा पेड़
   (ग) सूखे पेड़ की जड़
   (घ) अड़ियल

2. रावण और हिरण्यकश्यप की हार हुई, क्योंकि वे

   (क) शक्तिहीन थे।
   (ख) कुछ अधिक ही बुद्धिमान थे।
   (ग) जिद्दी और अत्यधिक आत्मविश्वासी थे।
   (घ) परिस्थितियों से लड़ नहीं पाए।

3. जीवन में कष्ट और परेशानी आने पर मनुष्य को क्या करना चाहिए?

4. इस निबंध में लेखक हमें किस द ष्टि से द ढ़ रहने की शिक्षा देता है?

7.3.4 भाषा-शैली

इस पाठ के लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' विशिष्ट श्रेणी के साहित्यकार हैं। उनकी रचनाएँ सहज और सरल भाषा में मिलती हैं। व्यक्ति एक बार पढ़ना शुरू करे तो पढ़ता ही चला जाए। हमें विश्वास है कि आपने यह पाठ पढ़ते समय ऐसा ही अनुभव किया होगा।

आपने एक बात पर और ध्यान दिया होगा कि लेखक ने कितनी कुशलता के साथ जीवन के समन्वयवादी द ष्टिकोण जैसे गंभीर विषय को अपनी सीधी-सादी भाषा में समझाया है। कठिन और बोझिल शब्दों का प्रयोग किए बिना ही वे सारी बातें कह गए हैं और हाँ, लेखक विषय को बहुत ही सामान्य ढंग से शुरू करता है और एक-एक द श्य को देखकर प्रश्न उठाता है उसका उत्तर खोजता है, फिर प्रश्न उठाता है और फिर उत्तर खोजता है। परंतु कहीं-कहीं पर उसे उचित उत्तर नहीं मिलता तो वह प्रश्न पर प्रति-प्रश्न करता है इस प्रकार लगातार कई प्रश्नों पर एक साथ चिंतन करते हुए ठोस परिणाम पर पहुँचता है। उदाहरण के तौर पर आपने पाठ में पढ़ा होगा कि एक जगह लेखक कहता है *''जो न हिलता है न झुकता है वह ही वीर पुरुष है। उसी समय उसका ध्यान उस ठूँठ की ओर जाता है जो न हिलता है न झुकता है परंतु वह तो वीर नहीं है उसमें जान ही नहीं फिर वीर कैसा!''* इसी को **प्रश्नोत्तरी शैली** कहते हैं। आप यह तो समझ ही गए होंगे कि लेखक प्रश्न करता है और स्वयं ही उस प्रश्न का उत्तर देता है।

यह पाठ प्रश्नोत्तरी शैली के रूप में लिखा गया है। इसमें विचारों का सिलसिला चलता चला गया है जो कि चिंतन से युक्त है, अतः चिंतन प्रधान शैली में लिखा गया यह एक

ललित निबंध है। यह निबंध आम बोलचाल की सरल भाषा में लिखा गया है परंतु इसका विषय जटिल है।

इस ललित निबंध में लेखक ने सरल काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है जैसे–*''पलंग पर लेटे-लेटे वह यों दीखता कि जैसे कुशल समाचार पूछने को आया कोई मेरा ही मित्र हो।'' (उपमा) ''यह इतना बड़ा पेड़ हवा का तेज़ झोंका आते ही पूरा इस तरह हिल जाता है, जैसे बीन की तान पर कोई साँप झूम रहा है।'' ''मान-मना'' (अनुप्रास), ''समझौता-समन्वय'', ''कुल्हाड़ी-कुदाल'', ''जीते-जागते जीवन में'', ''रपटी रपटती'' (अनुप्रास), ''भले ही वह इस ठूँठ की तरह निर्जीव हो या रावण की तरह ज़िद्दी।''* (उपमा)

इस प्रकार प्रभाकरजी की भाषा में नई छटा देखने को मिलती है लेखक ने नवीन शब्दावली का प्रयोग कर भाषा को अत्यधिक लालित्यपूर्ण और प्रभावी बना दिया है। नए शब्दों पर ध्यान दीजिए–डिक्टेटरी–अधिनायकता। आप जानते ही हैं रचनाकार ने यहाँ मुहावरे, लोकोक्तियों, सूक्तियों का प्रयोग करके अपनी भाषा को धारदार बनाया है। इससे भाषा में निखार आता है और वह कम शब्दों का प्रयोग कर अपनी बात को प्रभावी ढंग से दूसरों तक पहुँचाता है। लोकोक्तियों में प्रचलित भाषा का प्रयोग होने से निबंध में सहजता और मर्मस्पर्शता बढ़ गई है। लोकोक्तियों का रचनाकार ने स्थान-स्थान पर सटीक प्रयोग किया है। 'विश्व की जीवन प्रणाली है–कह, सुन। विश्व की यात्रा का पथ है–मान, मना, 'न हिलना न झुकना जीवन की स्थिरतां का, द ढ़ता का चिह्न है', 'हिलना और झुकना ही जीवन का चिह्न है', 'जीवन की स्थिरता द ढ़ता जीवन के नकली सत्य हैं', 'हम द ढ़ हों, जड़ नहीं', 'एक है जीवंत द ढ़ता और दूसरा निर्जीव जड़ता', 'जीवन वह है, जो समय पर अड़ भी सकता है और समय पर झुक भी', 'देह है नाशशील और आत्मा है शाश्वत।'

इस पाठ में लेखक ने अपनी भाषा में प्रवाह लाने के लिए एक और शैली भी अपनाई है–वह है, उदाहरण शैली। अपनी बात को कहते-कहते वह प्राचीन भारतीय और विदेशी परंपरा, संस्कृति और इतिहास से जुड़े व्यक्तियों को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करते चलते हैं, जैसे–रावण, स्टॉलिन, हिटलर आदि। आप राम कथा से जुड़े रावण के चरित्र से भली-भाँति परिचित हैं और यह भी जानते हैं कि अपने अड़ियल और ज़िद्दी व्यवहार के कारण ही राम-रावण युद्ध हुआ जिससे अहंकारी रावण का अंत हो गया।

पाठगत प्रश्न 7.4

1. इस पाठ में लेखक ने कुछ अरबी-फ़ारसी-उर्दू शब्दों का भी प्रयोग किया है। क्या आप उन्हें ढूँढ़कर यहाँ कोई पाँच शब्द लिख सकते हैं? जी! हाँ, तो फिर देर किस बात की? जल्दी से ढूँढ़िए और लिख दीजिए–

   1..... 2..... 3.....4..... 5.....

2. इस पाठ में किस प्रकार की शैली है?

   (क) विवरणात्मक (ग) चिंतन प्रधान

   (ख) व्यंग्यात्मक (घ) हास्य प्रधान

3. इस पाठ के वाक्यों का गठन कैसा है?

   (क) सरल/सामान्य (ग) लंबा

   (ख) कठिन (घ) गंभीर

4. ''भले ही वह उस ठूँठ की तरह निर्जीव हो या रावण की तरह जिद्दी।'' वाक्य में अलंकार है–

   (क) रूपक (ग) उत्प्रेक्षा

   (ख) उपमा (घ) यमक

5. यह निबंध किस श्रेणी के निबंध में आता है?

6. कुल्हाड़ी–कुदाल में कौन–सा अलंकार है?

7.4 भाषा कार्य

कुछ अलग शब्द वाक्य में प्रयुक्त होकर अर्थ को विशेष बल देते हैं। उन्हें निपात कहा जाता है, नीचे लिखे निपातों का प्रयोग पढ़िए:–

'ही' –

सामने **ही** दिख रही थी सड़क।
सामने सड़क **ही** दिख रही थी।
सामने सड़क दिख **ही** रही थी।

'भी' – वह समय पर अड़ **भी** सकता हैं
वह **भी** समय पर अड़ सकता है।
वह समय पर **भी** अड़ सकता है।

'न'/'नहीं' – (i) तुम **न** आओगे।
तुम **नहीं** आओगे?
तुम आओगे **न**?

'तो' – 'तो' न हिलना, न झुकना जीवन की स्थिरता का प्रतीक है।
न हिलना **न** झुकना **तो** जीवन की स्थिरता है।
न हिलना, **न** झुकना जीवन की **तो** स्थिरता है।
– तुम आओगे, **तो** मैं जाऊँगा
तो तुम आओगे और मैं जाऊँगा?
अतीत में रावण, **तो** इस युग में हिटलर।

'तक' – राधा ने **तक** मुझे नहीं बताया।

राधा ने मुझे **तक** नहीं बताया।

राधा ने मुझे बताया **तक** नहीं।

राधा **तक** ने मुझे नहीं बताया।

कुछ निपातों का प्रयोगकर वाक्य के अर्थ में आने वाली विशेषताएँ बताइए।

7.5 आपने क्या सीखा

1. जीवन में परिस्थितियों से समझौता करना एक सीमा तक ज़रूरी है।
2. एक पेड़ की जड़ के समान हमें अपने आदर्शों और सिद्धांतों पर द ढ़ रहना चाहिए और हवा में झूमते पेड़ के समान समन्वयवादी होना चाहिए।
3. विपरीत परिस्थितियों में विवेक से काम लेना चाहिए तथा परिस्थितियों से समझौता सोच-समझ कर करना चाहिए।
4. यह निबंध प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया है। यह एक विचारात्मक और चिंतन प्रधान ललित निबंध है।
5. सूत्र वाक्यों का प्रयोग करते हुए यह ललित निबंध सरस और प्रभावपूर्ण ढंग से लिखा गया है।
6. पाठ की भाषा साधारण आम बोलचाल की भाषा है पर पाठ का विषय चिंतन प्रधान है।

7.6 योग्यता विस्तार

(क) लेखक परिचय

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 29 मई, 1909 में सहारनपुर जिले के देवबंद नामक ग्राम में हुआ था। आप बचपन से ही विद्रोही स्वभाव के थे। आपकी राजनीतिक और सामाजिक कार्यों में गहरी दिलचस्पी थी जिसके कारण कई बार आपको जेल यात्रा भी करनी पड़ी। सन् 1935 में आप गांधी जी के सानिध्य में आए और स्वेच्छा से निर्धनता का व्रत लिया। उसके दूसरे ही दिन अपने दोनों पैत क मकान दान कर दिए। प्रभाकर जी की प्रमुख रचनाएँ हैं–'नयी पीढ़ी नये विचार' (1950), 'ज़िंदगी मुस्काई' (1954), 'माटी हो गई सोना' (1957), 'आकाश के तारे धरती के फूल' (1952), 'दीप जले, शंख बजे' (1958), 'बाजे पायलिया के घुँघरू' (1957) आदि।

आपने हिंदी के श्रेष्ठ रेखाचित्र, संस्मरण तथा ललित निबंध लिखे। यह द्रष्टव्य है कि उनकी इन रचनाओं में कलागत आत्मपरकता होते हुए भी एक ऐसी तटस्थता रहती

है कि उनकी चित्रात्मकता सदैव जीवित बनी रहती है। आपकी शैली की आत्मीयता और सहजता पाठक के लिए प्रीतिकर और हृदयग्राही होती है।

प्रभाकर जी उन थोड़े से साधकों में हैं जिन्हें साहित्य और पत्रकारिता में एक साथ उच्च-श्रेणी की सफलता मिली। इन्होंने लघुकथा, ललित निबंध, संस्मरण और रिपोर्ताज को नए आयाम दिए हैं तथा अन्य अनेक विधाओं में साहित्य रचा है।

(ख) कुल्हाड़ी और कुदाल में अंतर

कुल्हाड़ी लकड़ी काटने के काम में आती है और कुदाल से पत्थर तोड़ा जाता है। इसके आकार-प्रकार में अंतर होता है। नीचे दिए गए चित्र देखिए।

7.7 पाठांत प्रश्न

1. बाँझ के हरे-भरे पेड़ और ठूँठ के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?
2. लेखक ने क्यों कहा कि 'हमारे विचार लचीले' हों' स्पष्ट कीजिए।
3. आपके विचार से आदर्श मानव की जीवन-शैली कैसी होनी चाहिए?
4. निम्नलिखित शब्दयुग्म की व्याख्या कीजिए–

   दे-ले, कह-सुन, मान-मना,
5. निम्नलिखित गद्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

   (क) जीवन में देह है, जीवन में आत्मा है। देह है नाशशील और आत्मा शाश्वत। तो आत्मा को हिलना झुकना नहीं है और देह को निरंतर हिलना झुकना ही है। नहीं तो हम हो जाएँगे रामलीला के रावण की तरह जो बाँस की खपच्चियों पर खड़ा रहता है–न हिलता है न झुकता है। हमारे विचार लचीले हों, परिस्थितियों के साथ वे समन्वय साधते चलें, पर हमारे आदर्श स्थिर हों।

(ख) दो टूक बात यों कि जीवन वह है, जो समय पर हिल भी सकता है और समय पर झुक भी, पर ठूँठ वह है जो अड़ ही सकता है, झुक नहीं सकता।

(ग) एक है जीवंत द ढ़ता और दूसरा निर्जीव जड़ता। हम द ढ़ हों, जड़ नहीं।

6. निम्नलिखित सूक्तियों का भाव-पल्लवन कीजिए।

(क) 'मरियम सो मरियम', पै टरियम नहीं।'

(ख) 'न हिलना न झुकना जीवन की स्थिरता का चिह्न है।'

7. तानाशाही क्या होती है पाठ में आए उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

8. 'एक था पेड़ और एक था ठूँठ' पाठ के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

7.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्नों के उत्तर

1. (ख) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग) 5. (घ)

6. (ख) 7. (क) 8. (क)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1 1. (क) 2. (ख) 3. (क)

4. उसके ज़िद्दीपन और अड़ियल स्वभाव के कारण

5. उसे महसूस होता है कि उसका दोस्त सामने खड़ा उससे हाल-चाल पूछ रहा है।

7.2 1. (घ) 2. (क) 3. (घ)

4. अहंकारी और जड़ व्यक्ति का 5. काट-छाँट करना

7.3 1. (घ) 2. (ग) 3. एक सीमा तक समझौता

4. अपने आदर्शों और सिद्धांतों पर

7.4 1. इनकार, मुरदा, कम्बख़्त, मोर्चा, ज़िद्दी

2. (ग) 3. (क) 4. (ख) 4. (ख)

5. विचारात्मक/चिंतनप्रधान ललित निबंध 6. अनुप्रास